Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

# समावेशी शिक्षा का श्रवण बाधित बालकों एवं बालिकाओं की शिक्षा में योगदान : एक अध्ययन

**वन्दना मिश्रा**
शोधार्थिनी
नेहरू ग्राम भारती (मानित) विश्वविद्यालय
कोटवा–जमुनीपुर–दुबावल, प्रयागराज–221505 (उ0प्र0)

**Article Info**
Volume 5, Issue 3
Page Number : 41-49

**Publication Issue :**
May-June-2022

**Article History**
Accepted : 01 June 2022
Published : 15 June 2022

**सारांश:** - एक समेकित या समावेशी शिक्षा व्यवस्था में इस बात का उचित प्रावधान रहता है कि सभी प्रकार के बालक चाहे वे सामान्य हों या किसी विशष्टता या अक्षमताओं से युक्त दिव्यांग बालक, सभी साथ–साथ एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हुए विद्यालय में उपलब्ध शिक्षा अनुभवों को अच्छे से प्राप्त करें एवं अपने व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ। यह व्यवस्था यह माँग करती है कि अक्षमताओं से युक्त बालकों के प्रति किसी भी प्रकार का अलगाव, द्वेष और नकारात्मक भाव न रखा जाए, बल्कि उनकी विशेष समायोजन व शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सभी प्रबन्ध किए जाएँ।

**शब्द संक्षेप :** शिक्षा, समावेशी शिक्षा, समावेशी शिक्षा का उद्देश्य

## प्रस्तावना

## समावेशी शिक्षा : अर्थ व अवधारणा

समावेशी शिक्षा का तात्पर्य है समाज के सभी वर्गों के बच्चों को मुख्यधारा में समाविष्ट कर उन्हें शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना। इस प्रकार शिक्षा में समावेशीकरण का अर्थ है विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र तथा एक दिव्यांग छात्र तथा विविध प्रकृति के छात्र को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर प्राप्त होना। इसमें एक सामान्य छात्र व दिव्यांग

**Copyright: ©** the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

छात्र विद्यालय में साथ–साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। पहले समावेशी शिक्षा की परिकल्पना केवल विशेष छात्रों के लिए की गई थी, लेकिन वर्तमान में इसको समस्त छात्रों के लिए व्यवहार में लाया जाता है।

## समावेशी शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य

- विभिन्न प्रकृति के बालकों में निहित भिन्नता को समाप्त कर शिक्षा व्यवस्था में प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना करना।
- विशिष्ट बच्चों को सामान्य बच्चों की तरह आत्मनिर्भर बनाना तथा अक्षम बालकों का सर्वांगीण विकास करना।
- समाज में फैली दिव्यांग तथा अन्य अक्षम बच्चों के प्रति नकारात्मक भावना को दूर करना।
- अक्षम तथा दिव्यांग बालकों को शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने के साथ दूसरे के प्रति प्रेरणा की भावना को जगाना।
- यह सुनिश्चित करना कि कोई भी अपंग बालक, विशिष्ट बालक आदि शिक्षा के समान अवसर से वंचित नहीं रह सकता है।

## समावेशी शिक्षा का महत्त्व

समावेशी शिक्षा का महत्त्व निम्नलिखित है–

- छात्र अपने व्यक्तित्व के साथ दूसरे के व्यक्तित्व का भी सम्मान करना सीखता है।
- छात्रों में सहनशीलता, भावनात्मकता तथा सौहार्द्र के गुण उभरते हैं।
- वे दूसरे की शक्तियों तथा कमजोरियों का सम्मान करना सीखते हैं।
- दूसरे बच्चों की सहायता करके छात्र स्वयं में सन्तुष्टि का अनुभव करते ही हैं, साथ ही वे अपनी मित्रता को लम्बे समय तक बनाए भी रखते हैं।
- समावेशित कक्षा विभिन्नता में एकता की परिचायक होती है।
- समावेशित विद्यालयों में छात्र समूह के रूप में सद्भावनापूर्ण वातावरण में एक–दूसरे का सहयोग करना सीखते हैं।

- मानव संसाधन का सही निर्माण होता है।

## समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त

समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

- छात्रों के साथ किसी भी स्तर पर कोई भेदभाव नहीं होगा।
- सभी को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्राप्त होगा।
- स्कूली छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूर्ण करेगा।
- सभी छात्रों के लिए शिक्षा के समान अवसर होंगे।
- छात्रों के विचार सुने जाएँगे तथा उन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाएगा।
- छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नता उनके लिए लाभदायक होगी, नुकसानदायक नहीं।

## समावेशी शिक्षा के क्षेत्र

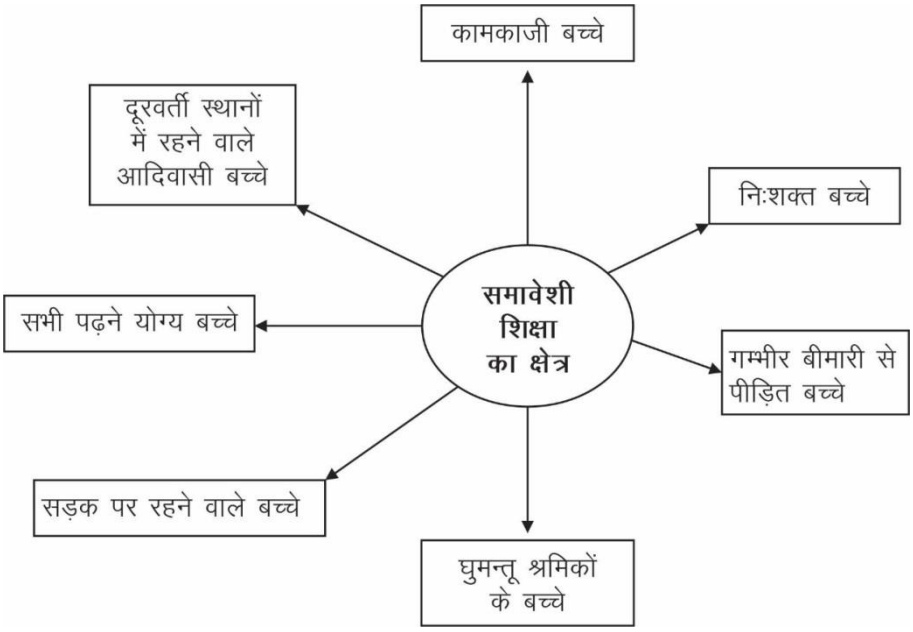


## सम्प्रेषण

जब दो या दो अधिक व्यक्ति आपस में किन्ही माध्यमों द्वारा सूचनाओं का आदान–प्रदान करते हैं तो उसे सम्प्रेषण कहते हैं।

सफल सम्प्रेषण करने के लिये तीन चीजों का होना आवश्यक है।

1. सम्प्रेषण करने के लिये किसी मुद्दा या विषय पर सम्पर्क का होना आवश्यक है।
2. सूचना भेजने वाला भाषा में निपुण व सक्षम होना चाहिए।
3. सूचना पाने वाले को भाषा का पर्याप्त ज्ञान होना आवश्यक है ताकि उसको सूचना प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो।

इनमें अगर एक कारक अनुपस्थित हो तो क्रिया नहीं होगी चूँकि सम्प्रेषण एक प्रक्रिया है जो विभिन्न चरणों से बनी हुई है। ऐसी अवस्था में सम्प्रेषण नहीं हो पाता और इसे सम्प्रेषण में कमी कम्यूनिकेशन गैप कहते हैं। अतः प्रेषक और ग्राहयता में परस्पर सम्पर्क द्वारा ही सम्प्रेषण सम्भव है।

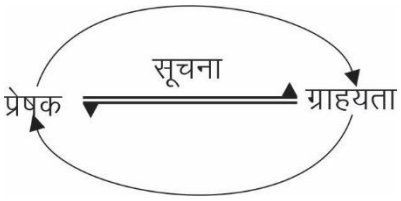


**सम्प्रेषण प्रक्रिया**

## सम्प्रेषण के प्रकार

सूचनाओं के आधार पर सम्प्रेषण मुख्यतः दो प्रकार का होता है–

1. मौखिक सम्प्रेषण
2. अमौखिक सम्प्रेषण

### मौखिक सम्प्रेषण

भाषा का मौखिक रूप वाणी है जो मनुष्य के लिये सम्प्रेषण करने का मुख्य साधन है। यह समाज को जोड़ने वाली एक कड़ी है। वाणी हमारे जीवन का एक अंग है जिसकी सहायता से हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

### अमौखिक सम्प्रेषण

मौखिक स्तर के अतिरिक्त सम्प्रेषण अमौखिक ढंग से भी करते हैं जैसे– लिखित रूप में। यहाँ भाषा एक लिखित रूप लेती है। किन्तु लिखित शब्द स्थायी होता है साथ ही सूचना को जनसमूह तक पहुँचाने की क्षमता रखती है। इसके अलावा सांकेतिक भाषा का भी प्रयोग अमौखिक सम्प्रेषण

के लिए किया जाता है।

## अमौखिक सम्प्रेषण के माध्यम

आँखों का इशारा, मुख मुद्रा, हाथों के संकेत आदि अमौखिक सम्प्रेषण के माध्यम हैं। अतः सम्प्रेषण को यदि मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग होता है।

मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न परिस्थितियों के आधार पर सम्प्रेषण को पाँच भागों में बाँटा है। जो निम्नलिखित है–

I. **द्विव्यैक्तिक सम्प्रेषण –** ऐसी परिस्थिति में दो व्यक्ति होते हैं जो अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। जैसे– दो मित्र आपस में बात–चीत करते हैं।

II. **लघु समूह सम्प्रेषण –** इस प्रकार की परिस्थिति में दो से अधिक व्यक्ति सम्मिलित होते हैं जो एक लघु समूह के रूप में होते हैं। इनमें सम्प्रेषण क्रिया प्रत्यक्ष रूप से होती है।

III. **लोक सम्प्रेषण –** इस प्रकार का सम्प्रेषण सार्वजनिक होता है। जैसे– कालेज, मंदिर, खेल का मैदान इत्यादि।

IV. **संगठनात्मक सम्प्रेषण –** इस प्रकार का सम्प्रेषण क्रिया प्रायः सार्वजनिक स्थानों पर होती है। जैसे– संस्थान, उद्योग, शैक्षिक संस्थान, इत्यादि।

V. **जन सम्प्रेषण –** इस प्रकार के सम्प्रेषण क्रिया में कॉफी लोग एक समय में शामिल होते हैं। जैसे – सिनेमा, घर में समाचार पत्र इत्यादि।

VI. **सम्पूर्ण सम्प्रेषण –** मौखिक व हस्तचालित विधियों को मिश्रित कर एक अन्य विधि का विकास किया गया है। जिसको हम पूर्ण सम्प्रेषण के नाम से जानते हैं। श्रवण दिव्यांग बच्चों की अविशिष्ट श्रवण क्षमता संकेत, अंगुली एवं इशारे आदि का प्रयोग करके सिखाया जाता है। इसमें पोश्चर का प्रयोग निर्बन्धित है। पूर्ण सम्प्रेषण का अर्थ बधिर व्यक्तियों को पूर्ण सम्प्रेषण का ज्ञान तथा उनकी भाषा कौशल का विकास होता है। इस विधि में फिंगर स्पेलिंग द्वारा भाषा निपुणता प्राप्त करने के पश्चात सम्प्रेषण करते हैं। अमेरिका में पूर्ण सम्प्रेषण का प्रयोग होता था किन्तु वर्तमान समय में ओरल–ऑरल पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। इसी परिपेक्ष में भारत में भी पूर्ण सम्प्रेषण सम्भव हुआ जो बाद में ओरल–ऑरल पर ज्यादा ध्यान दिया गया।

## सम्प्रेषण की अभिव्यक्ति

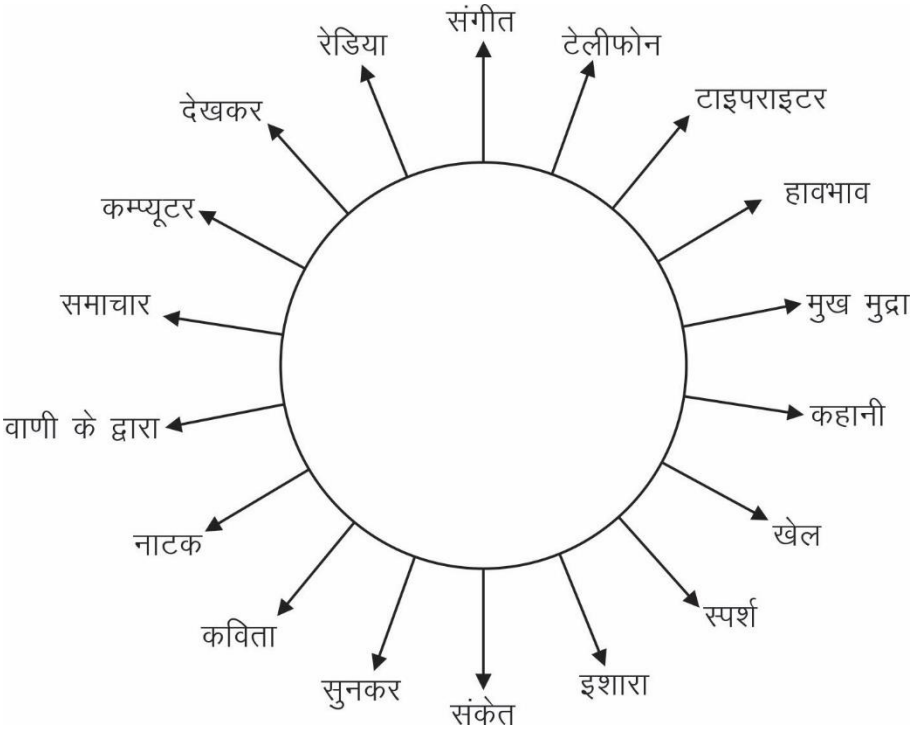


## सम्प्रेषण की अन्य तकनीकि

1. आनन अभिव्यक्ति – अशाब्दिक सम्प्रेषण क्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति के चेहरे के हाव–भाव द्वारा सूचनाएँ प्राप्त होती हैं तथा इसमें नेत्रों, भौहें आदि को चढ़ा–बढ़ा कर सम्प्रेषण अभिव्यक्ति की जाती है। प्रायः जब व्यक्ति नाक सिकोड़कर सूचना देता है तो उससे नाराजगी प्रकट होती है।

2. पराभाषी – इस सम्प्रेषण क्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति की अभिव्यक्ति की पहचान आवाज के भारीपन, आवाज की तीव्रता से होती है जिससे सम्प्रेषक की अभिप्रेरणा एवं संवेग का पता चलता है कि वह व्यक्ति किस प्रकार के व्यक्तित्व का है।

## सम्प्रेषण को प्रभावित करने वाले कारक

प्रत्येक सम्प्रेषण का उद्देश्य उस व्यक्ति को प्रभावित करना होता है जो उसे ग्रहण करता है तथा स्रोत तथा सम्प्रेषक संचार के माध्यम से प्राप्तकर्ता को प्रभावित करने की कोशिश करता है। इसके मुख्य कारक निम्नलिखित है–

I. स्रोत का सम्प्रेषक की विशेषताएँ

II. सूचना की विषय–वस्तु

III. संचार का माध्यम

## श्रवण बाधित विद्यार्थियों की शिक्षा

श्रवण बाधित बच्चों की भाषा एवं वाणी का प्रभाव उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ता है। विकास का सभी पहलू आपस में एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। क्योंकि श्रवण बाधित बालक सुन नहीं सकता है अतः वह उन शब्दों को नहीं सीख पाता जो दैनिक जीवन हेतु अति आवश्यक है। वह प्रत्येक चीज देखता व समझता है परन्तु भाषायी रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। वह यह भी नहीं सीख पाता कि वाक्य किस प्रकार से बनाये जाते हैं जिससे कि वह पूर्ण रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकें। श्रवण दोष से ग्रसित बालक स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए संकेतों का प्रयोग करता है किन्तु दूसरे उसे हमेशा समझ नहीं पाते तथा दूसरों के द्वारा भी व्यक्त सामान्य निर्देश से बाहर के संकेत को स्पष्ट रूप से श्रवण बाधित व्यक्ति नहीं समझ पाता। श्रवण दोष से ग्रसित बच्चों/विद्यार्थियों की शिक्षा को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है।

## सम्प्रेषण तकनीकी

- साइन भाषा
- लिप रीडिंग (ओष्ठ पठन)
- संकेत वाणी (क्यूड स्पीच)
- गति विधि (मूवमेंट विधि)
- एम्लीफायर का उपयोग
- शिक्षण तकनीकी – शिक्षक श्रवण दोष से ग्रसित विद्यार्थियों को पढ़ाने हेतु निम्न तरह की तकनीकी अपनाता है–
- शिक्षक द्वारा पढ़ाते समय शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए जैसे– मॉडल, विभिन्न आकृति वाले को बताने हेतु खांचे, मानचित्र, ग्लोब, चित्र आदि।
- ऐसे बच्चों को पढ़ाने हेतु एक विशेष शिक्षक की नियुक्ति करनी चाहिए।
- ग्रुप हियरिंग एड आदि का प्रयोग करना चाहिए।

- सीखने में कहाँ कमी हो रही है इसकी ओर ध्यान देना चाहिए तथा आई0सी0टी0 का प्रयोग भी करना चाहिए।
- शिक्षण कार्य कराते समय बीच–बीच में प्रश्न को पूछना चाहिए ताकि यह पता चल सके कि बच्चों को कितना समझ में आ रहा है।
- नोट्स – टेकर का इंतजाम करना चाहिए यदि किसी कारणवश इसका इंतजाम नहीं हो पाये तो उसके साथ में पढ़ने वाले अन्य बच्चों की सहायता लेनी चाहिए और एक कार्बन कॉपी लिखकर देने को कहना चाहिए।

शिक्षक को शिक्षण के समय वार्तालाप, कहानी, समाचार–पत्र आदि का प्रयोग करना चाहिए तथा उसे श्यामपट्ट पर लिखना चाहिए जिससे श्रवण बाधित बच्चों में भाषा ज्ञान के साथ–साथ अन्य कौशल का निदान भी हो सके।

**उपसंहार**

श्रवण दोष से ग्रसित बालक क्योंकि सुन नहीं सकता है अतः कक्षा–कक्ष में पढ़ायी गयी चीजों को वह समझ नहीं पाता है। जिससे वह पढ़ाई गयी विषय वस्तु को पूरी तरह से सीख नहीं पाता। श्रवण दोष से ग्रसित बालक में सम्प्रेषण की सबसे बड़ी समस्या आती है। अतः ऐसे बच्चों को शिक्षित करने हेतु कुछ विशेष सम्प्रेषण तकनीकी का प्रयोग किया जाता है जैसे – शिक्षक पढ़ाते समय साईन लैंग्वेज के प्रयोग साथ–साथ बच्चों की तरफ मुँह करके पढ़ाता है जिससे श्रवण बाधित बच्चे लिप रीडिंग करके विषय वस्तु को समझते हैं साथ ही शिक्षक ऐसे बच्चों को श्रवण यंत्र पहनाये रहता है जिससे बच्चों को कुछ हद तक आवाज सुनाई देती है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. उच्चतर शिक्षा में मनोविज्ञान, डा0 एस0पी0 गुप्ता एवं डा0 अल्का गुप्ता।
2. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, डा0 मालती सारस्वत।
3. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ।
4. सिंह अरूण कुमार (2001), उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
5. सिंह अरूण कमार (2001), उच्चतर नैदतिक मनोविज्ञान, नरेन्द्र प्रकाश जैन प्रकाशव, मोतीलाल बनारसी दास बंगलो रोड, दिल्ली।
6. के0 ऐलीब सेलन (1992), द एक्सेप्शनल चाइल्ड : मेनस्ट्रीमिंग इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन, सेकेन्ड एडिशन, डल्मर पब्लिशर्स इंक, न्यूयार्क।
7- चौरसिया बी0डी0 (2003), ह्यूमन एनॉलमी–रीजनल एण्ड एप्लाईड–हेड, नेक एण्ड ब्रेन, थर्ड एडिशन, वाल्यूम–3, सीबीएस पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।